प्रश्न यह है :

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाये।"

**प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।**

**अध्यक्ष महोदय** : प्रस्ताव पारित हुआ और श्री संगमा को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित घोषित किया जाता है।

अब, मैं प्रधान मंत्री, विपक्ष के नेता और अन्य दलों तथा ग्रुपों के नेताओं से अनुरोध करता हूं कि वे कृपया अध्यक्ष महोदय को अध्यक्षपीठ तक ले जायें और अपना कार्यभार संभालने में उनकी सहायता करें।

**(सदन के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी, विपक्ष के नेता श्री पी.वी. नरसिंह राव और कुछ अन्य दलों और ग्रुपों के नेता श्री पूर्णो अगितोक संगमा को अध्यक्षपीठ तक ले गये।)**

**पूर्वाह्न 11.42 बजे**

(श्री पूर्णो अगितोक संगमा, **अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुये**)

---

## अध्यक्ष महोदय को बधाईयां

**पूर्वाह्न 11.42 ¼ बजे**

**[हिन्दी]**

**प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी)** : अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में आपका अभिनन्दन करते हुये मुझे अत्यधिक आनन्द हो रहा है। आपका निर्वाचन सर्वसम्मत हुआ है। यह जहां आपकी लोकप्रियता का परिचायक है, वहां इस बात का भी संकेत है कि भारतीय लोकतंत्र और भारतीय लोकतंत्र की यह सबसे ऊंची प्रतिनिधि संस्था राजनैतिक भेदों के बावजूद महत्वपूर्ण प्रश्नों पर एक हो सकती है, मिलकर फैसले कर सकती है।

अध्यक्ष महोदय, आपको स्वतंत्र भारत में जन्म लेने का सौभाग्य मिला था। आप उस क्षेत्र से संबंधित हैं जिसे उत्तर-पूर्व के नाम से जाना जाता है। वहां भारत का महत्वपूर्ण भाग है मगर अपने को उपेक्षित अनुभव करता है। कभी-कभी वहां के निवासियों को लगता है कि हम केवल दिल्ली से हीं दूर नहीं हैं, हम दिल से भी दूर हैं। इस तरह की भावना पैदा होने का कोई कारण नहीं है और मुझे विश्वास है कि आपके निर्वाचन से इस भावना के कम होने में सहायता मिलेगी।

आपने अनेक दायित्वों को संभाला है। आपको हमने अनेक रूपों में, अनेक रंगों में देखा है। शायद ही केन्द्रीय सरकार का कोई विषय हो जो आपके कुशल हाथों से संवारा नहीं गया है। श्रम मंत्री के रूप में आपकी जो लोकप्रियता रही, आपके विरोधियों ने भी उसका लोहा माना है। आप मुख्य मंत्री का दायित्व निभा चुके हैं।

आपके निर्वाचन से इस सदन की गरिमा बढ़ी है। महान ईसाई मत के एक निष्ठावान अनुयायी के नाते सहिष्णुता, बंधुता सबको साथ लेकर चलने का गुण, अब राष्ट्रीय स्तर पर एक पूंजी बनेगा। मुझे विश्वास है कि आपके नेतृत्व में सदन के अधिकार और सदस्यों के अधिकार सुरक्षित रहेंगे। भारत की जनता ने अपना निर्णय दे दिया, अब जनप्रतिनिधि कसौटी पर कसे जाने वाले हैं। जैसा मैंने कहा, लोक सभा सर्वोच्च प्रतिनिधि संस्था है। हमें सदन की गरिमा बनाये रखनी है। लोकतंत्र को अक्षुण्ण रखना है। मैं आज देख रहा हूं, कुछ हमारे पुराने मित्र फिर से निर्वाचित हुए हैं। अपने स्थान पर बैठने की बजाय, सदन के मध्य की ओर बढ़ने का उनका जो आकर्षण है, वह अब जरूर कम होगा। हम गरिमा से सदन का काम चलायें, इस बात की आवश्यकता है। जहां कहीं हम भटके, आप हमें नियंत्रित कर सकते हैं। आप हमें सही राह पर ला सकते हैं। आपको सबको साथ लेकर चलना है। हम आपकी हृदय से सफलता चाहते हैं और आपको पूरा सहयोग इस कार्य में देंगे, यह आपको आश्वासन देना चाहते हैं। एक बार फिर आपका अभिनंदन, आपको बधाई।

**[अनुवाद]**

**श्री पी.वी. नरसिंह राव** (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि आप सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गए हैं। सर्वसम्मति इस चुनाव का मूलतत्व है और मैं इस भावना का तहे दिल से स्वागत करता हूं क्योंकि इससे आपको निष्कर्षों पर पहुंचने में बहुत आसानी होगी और आपको अत्यधिक शक्तियों तथा कार्यसाधकता भी मिल गई है, जो कि अन्यथा अति कठिन होता।

मैंने आपको विभिन्न पदों पर अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए अत्यन्त नजदीक से देखा है। आपने प्रत्येक पद पर अत्यन्त सफलतापूर्वक कार्य किया है। मुझे याद है कि जब आप मेघालय के मुख्य मंत्री थे तो आपको विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। मुझे स्मरण है कि भारत के श्रम मंत्री के रूप में कार्य करते हुये आपको किन-किन गम्भीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। परन्तु, आपने अति दक्षतापूर्वक कार्य किया और आप भारत के अति सफल श्रम मंत्री साबित हुये। जब आपने श्रम मंत्री का पद भार सम्भाला था तब परिस्थितियां इतनी कठिन थीं कि अगर आप जैसा प्रतिभाशाली और कुशल श्रम मंत्री नहीं होता तो सम्पूर्ण नीति ही विफल हो जाती। इसलिये, मुझे प्रसन्नता है कि आपकी प्रतिभा के अनुरूप ही आपका उस स्थान के लिए चयन किया गया है जहां आपकी प्रतिभा की अत्यन्त आवश्यकता होगी और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने वर्तमान दायित्वों का निर्वहन अपनी पूर्ण प्रतिभा एवं क्षमता से सफलतापूर्वक कर पायेंगे।

मैं आपका स्वागत करता हूं और सदस्यों से अनुरोध करना चाहता हूं कि वे आपको सभा की गरिमा बनाए रखने में सहयोग दें। मुझे विश्वास है कि आप भी सभा की गरिमा बनाए रखना चाहेंगे और संसदीय लोकतन्त्र की उत्कृष्ट परम्पराओं को कायम रखते हुये सभा के कार्य को संचालित करने का हर सम्भव प्रयास करेंगे।